रात्रि क्लास 26-8-68 ओमशान्ति शिव बाबा याद है?

भक्तिमार्ग में ध्यान के लिए कितनी मेहनत करनी पड़ती है। यहां तो बैठे2 चले जाते हैं। कोई ने सिखलाया तो नहीं है। छोटी2 बच्चियां भी आपे ही चली जाती थी। जैसे कि खेल हो गया था। आपे ही चली जाती थी आपस में। भक्तिमार्ग में तो बहुत मेहनत करनी पड़ती है। तुम्हारा देख इसको फिर जादू कह देते हैं। यह है खेल-पाल। कोई2 को खेल-पाल की बहुत आदत होती है। तंग करते हैं तो सेन्टर से हो भगाना पड़ता है। इनको माया की बिमारी कहा जाता है। अभी तुम जानते हो हम बाप दादा के सामने बैठे हैं। शिव बाबा के साथ हैं। ब्रह्मा द्वारा बाप ने अपना परिचय दिया है, मैं भी छोटी बिन्दी हूं। मैं भी पार्टधारी हूं। ड्रामा के बन्धन में हूं। जरा भी नीचे ऊपर नहीं हो सकता। बड़ा ही एक्युरेट ड्रामा चल रहा है। सारी दुनिया की जीव की आत्मा पार्टधारी है। कितना बड़ा एक्युरेट बना हुआ ड्रामा है। वह हद की ड्रामा आदि भी एक्युरेट है। वह फिर रिपीट करेंगे। बायसकोप नाटक आदि देखेंगे। कल्प पहले मिसल होता रहता है। दुःख सुख की बात नहीं। साक्षी हो देखते भी हो पार्ट भी बजाते हो। मनुष्य कितने भी धनवान हैं ढेर पैसा है परन्तु क्या करेंगे। सभी खत्म हो जावेंगे। देवताओं के लिए तो फिर सभी कुछ नया हो जावेगा। खानियां आदि भरपूर हो जावेंगी कल्प2 होता है। जो कुछ होता है ड्रामा अनुसार नथिंग न्यू। बाढ़ आया कितना नुकसान हो गया। नोट आदि तो पानी में ही खत्म हो जावेंगे। वहां तो सभी कुछ नया मिलना है। महल आदि सभी नये बनने होंगे ना। ईंटों के महल बड़ी फाईन होंगी। सायंस वाले सभी कुछ सीख रहे हैं। संस्कार ले जावेंगे। जिनमें जो संस्कार होंगे अच्छे2 यहां भी आवेंगे जरा। थोड़ा भी सुनेंगे तो प्रजा बन जावेंगे। कारीगर तो प्रजा ही होंगी ना। तो सभी कुछ अच्छी चीजें होंगे। ड्रामा का प्लैन ऐसे कहते हैं। तुम बच्चों को भी खुशी तो बहुत होती है ना। वन्डर आफ द वर्ल्ड है। बाप का वन्डर भी सब से अच्छा है एकदम कोई भी मनुष्य वहां दुःख पा न सके। शान्तिधाम में शान्ति ही शान्ति है। फिर यहां मनुष्य सृष्टि में अशान्ति भी होती है तो शान्ति भी होती है। तो यह सभी बातें बाप ही समझाते हैं। बाकी थोड़ा समय है। अभी तो राजधानी स्थापन नहीं हुई है। यह भी बता देते हैं यज्ञ में विघ्न जरूर पड़ते हैं। कहते हैं बच्चे कैसे होते हैं। अभी तो कह देते योगबल से। आगे चल यह भी जो ड्रामा में होगा वह खुलता जावेगा। पार्ट नूंधा हुआ है ना बनाने का। तो वह निकलता जावेगा तुम सुनते जावेंगे। मूल बात है बाप और वर्सा। हरेक पुरुषार्थ कर रहे हैं। जो जैसा करते हैं उसमें खुश होना चाहिए। लटकने आदि की दरकार ही नहीं ड्रामा में नूंध है। बच्चों का आपस में नहीं बनता है। जिसको लुनपानी कहते हैं। जो होना न चाहिए। गलानी कराते हो तो फिर सोना दण्ड पड़ जाता। ऊंच पद पा न सके। सदगुरु का निन्दक ठौर न पाये। यह पढ़ाई है ना। तुम बच्चे समझते हो। दिल में आता है ऊंच ते ऊंच बाप कैसे साधारण तन में आये हैं। कैसे पढ़ाते हैं। शास्त्रों में तो है नहीं। तब तुमको कहते हैं शास्त्रों में तो यह है नहीं। यह तो ज्ञान का सागर है खुद ही कहते हैं यह राजयोग का ज्ञान प्रायः फिर लोप हो जाता है। बाप जाने तुम जानो। बस। कोई को पता नहीं पड़ता है कि यह कौन है। मुख्य दो बात हैं। सिध करनी है एक तो गीता का भगवान कौन। दूसरा परमात्मा सर्वव्यापी नहीं। बहतों के ओपिनीयन का वाल्युम (किताब) बनेगा तब फिर ठंढे हो जावेंगे। अभी तुम मैनारिटी में हो। फिर मैजोरिटी में हो जावेंगे। तुम्हारी जीत होगी। सभी तुम्हारे तरफ आवेंगे। समझ जावेंगे उन्हों को ज्ञान सागर शिव से ज्ञान मिलता है। पिछाड़ी को क्या होता है। आगे चल देखेंगे। इसमें निडरपना भी बहुत चाहिए। और खुशी। मिरवा मौत ... मलुक तुमको बनने का है। कर्मातीत अवस्था में निडर हो जावेंगे। नई दुनिया और पुरानी दुनिया तुम अभी समझते हो। तुम बच्चों को तो बहुत खुशी होनी चाहिए। दिन प्रति दिन। तुम पक्के हो जावेंगे तो तुमको बहुत मजा आवेगा। अभी बैठते हो, भोजन पाते हो बड़ी खुशी होनी चाहिए हम बेहद के बाप से भोजन पाते हैं। हम क्या बनते हैं। बड़ी खुशी अन्दर में आनी चाहिए। मुंझने की बात ही नहीं। जितना आगे बढ़ते जावेंगे अवस्था अच्छी होती जावेगी। पक्का निश्चय होता जावेगा। पैसे कौड़ी भी क्या करेंगे। यह तो खलार

हो जावेंगे। हमको अपना राज्य स्थापन करना है। अपने पैसे ही काफी है। कोई से लेने की भी दरकार नहीं। इसमें खर्चे की बात ही नहीं। जो कल्प पहले हुआ था वही होगा। बाकी पिछाड़ी आकर बचे है। रिहलसल होती रहेंगी। बहुत थोड़ा समय है। याद की यात्रा की मेहनत करनी है। शरीर निर्वाह करते यह याद रहे। अपने को आत्मा समझ बाप को याद करो। तो बहुत अच्छी अवस्था रहेंगी। बाप दादा कहते हैं हम कल्प2 पार्ट बजाते हैं बच्चों के साथ। तुम्हीं से खाऊं बैठूं यह भी अभी का गायन है। मनुष्यों को तो पता ही नहीं। कहेंगे निराकार के साथ कैसे करेंगे। वह बेहद का निराकार बाबा, यह बेहद का साकारी बाबा। इन से ऊंच कोई होता नहीं। 2। जन्म लिये बेहद का वरसा मिलता है तो बहुत नशा होना चाहिए। बच्चों को कहां भूल जाता है फिर याद करना चाहिए। याद से ही विकर्म विनाश होते हैं। बैटरी चार्ज होतीहै। बाप बार2 समझाते हैं मन्मनाभव। इनका अर्थ तो मोस्ट ईजी है। अच्छा रूहानी बच्चों को रूहानी बाप दादा का याद प्यार गुडनाईट और नमस्ते।

रात्रि क्लास 27-8-68 :- ऐसी भी कोई बात है जो बच्चों को समझ में नहीं आती है। बाप जहां समझाते हैं तो ऐसी हो नहीं सकती। बाप ही ऊंच ते ऊंच ज्ञान का सागर है। मनुष्य को बाप का परिचय मिल जाता है। तो समझ जाते हैं इन से ऊपर कोई है नहीं फिर हम प्रश्न क्या पूछें। टीचर से पढ़ा जाता है, गुरु से सदगति की शिक्षा ली जाती है। वह बाप टीचर गुरु है तो फिर कोई बात पूछने की रह नहीं जाती है। सभी में नम्बर वन वह है। वह तो बच्चों को सभी कुछ समझा ही देते हैं। बाकी भक्ति मार्ग में तो प्रश्न अनेकानेक हैं। शास्त्रार्थ कर आपस में थक पड़ते हैं। यहां तो है चुप। बाप को याद करना है बस। बेहद का बाप है ही बेहद का वरसा। वरसा माना स्वर्ग की बादशाही, स्वर्ग की बादशाही माना देवता। देवता माना देवीगुण। सभी पास हो गये हैं ना। बाप को जानने से फिर सभी कुछ जान जाते हैं। पढ़ कर तुम बच्चे नम्बरवार होशियार हो गये हो। बाप माना वरसा। वरसा है विश्व का विश्व का वरसा माना देवता। देवता माना देवीगुण। और क्या चाहिए। अन्त में यही अक्षर निकलता है मन्मनाभव का। हो सकता है बाप भी पिछाड़ी में इतना ही समझावेंगे मन्मनाभव। डल बुधि को क्या समझावेंगे। उनको ऐसे नहीं रह जाना है। समझाने का कुछ रहता ही नहीं जो समझावें। 84 का चक्र तो समझा दिया बाकी क्या कुछ समझाने का रहता ही। 85 का चक्र तो होता ही नहीं। कचहरी की जाती है इसलिए की सावधान रहेंगे। जैसे बाबा कहते हैं इस जन्म की भूलें बता दो तो हलका हो जावेंगे। सुनावे नहीं आपे ही रजिस्टर में लिख देवे तो भी सुनाना हो गया। भूलें तो अन्त तक होती रहेंगी। बाप को याद नहीं करते यह भी भूल हुई ना। अभूल जब बनेंगे तब ऊंच पद। आगे चलकर हरेक की अवस्था से तुम समझ जावेंगे। इस समय तो अनेकानेक भूलें होती हैं। बाकी पुरुषार्थ करना चाहिए। नजदीक आना है। तकदीर में रोला है तो फिर खड़े नहीं हो सकते। पुरुषार्थ ही नहीं करते। तो फिर पिछाड़ी में जाकर पड़ेंगे। सर्विस तो बहुत है। कितने मनुष्य मरते हैं। जहां कोई मरे वे तो तुम जाकर सर्विस करो। कहां गया? स्वर्ग कहां है? स्वर्ग तो आने वाला है। श्मशान में बहुत सर्विस तुम कर सकते हो। ढेर को समझा सकते हो। सतसंग अच्छा जम जावेगा। वहां सेन्टर बहुत अच्छा खुल सकता है। वहां बुलाने की भी दरकार नहीं। श्मशान में सेन्टर तो तुमको बहुत मिल सकेंगे। खुशी से देंगे। ढेर सर्विस है। श्मशान में भी तो घर में भी। उस समय श्मशानी वैराग्य होता है। तो तीर अच्छा लगता है। एक सीढ़ी और दो चित्र ले जाये बैठे। बस। इससे बहुत सर्विस कर सकते हो। सर्विस के लिए बाप ने बहुत युक्तियां बताई हैं। दिन प्रति दिन सर्विस बहुत होती जावेगी।

जिस यज्ञ से इतना ऊंच पद पाते हैं तो इस यज्ञ की सम्भाल भी अच्छी करनी होती है। सभी को मिल-जुल यज्ञ की रेख-देख करनी है। किसको भी दुःख न दे। अच्छा मीठे2 सिकीलधे रूहानी बच्चों को रूहानी बाप दादा का याद प्यार गुडनाईट। रूहानी बच्चों को रूहानी बाप का नमस्ते।

-: शिव बाबा याद है :- *: स्वर्ग की बादशाही याद है :-*